अध्याय द्वितीय

अध्याय-द्वितीय

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

सतत् मानव प्रयासों से भूतकाल में एकत्रित ज्ञान का लाभ अनुसंधान में मिलता है। अनुसंधानकर्ता द्वारा प्रस्तावित अध्ययन से, प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में, संबंधित समस्याओं पर पहले किये कार्य से बिना जोड़ो, स्वतंत्र रूप से अनुसंधान कार्य नहीं हो सकता। किसी भी अनुसंधान अध्ययन की योजना में महत्वपूर्ण कदमो में एक अनुसंधान पत्रिकाओं पुस्तको, अनुसंधान विवेचना, शोधलेख व अन्य सूचना स्त्रोतो की सावधानीपूर्वक समीक्षा है। किसी अच्छे नियोजित अनुसंधान अध्ययन से पहले संबंधित सहित्य की समीक्षा अति आवश्यक है।

साहित्य का पुनरावलोकन प्रत्येक वैज्ञानिक अनुसंधान की प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण पक्ष है। साहित्य का सावधानीपूर्वक पुनरावलोकन अनुसंधान के संबंधित क्षेत्र में अनुसंधानकर्ता को महत्वपूर्ण चरो के बारे में जानकारी प्रदान करता है तथा उसके क्षेत्र की सीमा में स्थित चरो को चुनने में मदद करता है, कार्य की पुनरावृत्ति को रोकता है, पूर्व में किया गया अध्ययन वर्तमान अध्ययन के लिये आधारशिला का कार्य करता है। साहित्य के पुनरावलोकन के माध्यम से एक अनुसंधानकर्ता भावी अनुसंधानों के लिये एक अच्छा परिदृश्य बनाता है। साहित्य का सृजन पुनरावलोकन अनुसंधानकर्ता को वर्तमान अध्ययन से संबंधित पूर्व में किये गये अध्ययनों को एकत्रित तथा स्वीकृत करने में सहायक होता है। पूर्व में अध्ययनों का एकीकृत संग्रह अनुसंधानकर्ता को संबंधित शोध को पहचानने में भी मदद करता हैं।

2.1 संबंधित पूर्वशोध कार्यो का पुनरावलोकन

उपासनी (1966) ने ''महाराष्ट्र राज्य के ग्रामीण शालाओ के शिक्षकों के वर्तमान शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम का मूल्यांकन'' शीर्षक पर शोध किया। इस शोध कार्य के उद्देश्य वर्तमान में चल रहे शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमो की कमियो तथा अच्छाइयो का पता आत्म मूल्यांकन विधि द्वारा पता करना था। और इनके अध्ययन के निष्कर्ष थे - (1) वर्तमान में जो आवश्यक योग्यता प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान में प्रवेश के लिये या शिक्षक चुनाव में रखी गयी थी उनको बदला जाना चाहिये। (2) प्राथमिक शिक्षको की प्रशिक्षण का समय बढ़ाया जाना चाहिये। (3)प्राथमिक शिक्षको का प्रशिक्षण नयी चुनौती के रूप में रखा जाना चाहिये।

बौनजी (1967) ने "भारत में प्राथमिक शिक्षको के प्रशिक्षण पर एक अध्ययन किया। इसमें इनके उद्देश्य थे गुणात्मकता और मात्रात्मकता के आधार पर अध्ययन करना। इस शोध के निष्कर्ष थेः- (1) शिक्षा के पुराने नमूने में बदलाव आना चाहिये क्योंकि एक नई आयु में, एक स्कूल में एक शिक्षक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। (2) सभी छात्र प्रशिक्षणार्थियो को ज्ञान के विस्तार और स्वतंत्र जीवन जीने के लिये यह प्रशिक्षण संस्थान का अद्धितीय महत्व है।

मलैया (1968) ने "मध्य प्रदेश में शिक्षक प्रशिक्षण में एक अध्ययन किया। इसमें उनके अध्ययन के उद्देश्य थेः- (1) शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम में आधुनिक चलन का अध्ययन करना। (2) मध्य प्रदेश में शिक्षण प्रशिक्षण की समस्याओं का अध्ययन करना और इसके लिये कुछ प्रभावपूर्ण सुझाव देना।इस उद्देश्य के कुछ निष्कर्ष थेः- (1) विभिन्न स्तरो पर शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम में एक अच्छा प्रभावपूर्ण सामन्जस्य बनाया जा सकता है। (2) मध्य प्रदेश एक कृषि प्रधान राज्य है, तो शिक्षक प्रशिक्षण में कृषि, सहयोग, ग्रामीण जन-जीवन को प्रशिक्षण कार्यक्रम में शामिल कर सकते थे।

गुप्ता (1971) ने "प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान में प्रवेश प्रक्रिया पर एक अध्ययन" किया जिसमें इनके उद्देश्य थेः- (1) इस अध्ययन का उद्देश्य था कि शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान में प्रवेश की जो प्रक्रिया है, उस पर अपना सुझाव देना ताकि अच्छे प्रशिक्षणार्थियो को प्रशिक्षण संस्थान में प्रवेश मिल सके। इस शोध मैं निष्कर्ष थेः- (1) प्रवेश के लिये योग्यता कम से कम 10+2 होना चाहिये। (2) नये प्रशिक्षणार्थियों के लिये आयु सीमा 15 से 30 वर्ष होनी चाहिये, और अप्रशिक्षित शिक्षको के लिये आयु सीमा 45 वर्ष होनी चाहिये।

मामा, (1980) ने महाराष्ट्र प्रांत के शिक्षकों पर अंतः सेवाकालीन प्रशिक्षण का प्रभाव जानने के लिये अध्ययन किया। जिसके उद्देश्य में महाराष्ट्र प्रांत के शिक्षकों को अंतः सेवाकालीन प्रशिक्षण के लिये शिक्षक संख्या, माध्यम तथा प्रशिक्षण का पता लगाना, अंत सेवाकालीन प्रशिक्षण की आवधारणा के बारे में जानना, शिक्षकों में शैक्षिक एवं मनोरंजनात्मक सामाग्री पढ़ने की आदत का पता लगाना था। अध्ययन के परिणाम में अंतः सेवाकालीन प्रशिक्षण को कम महत्व दिया जाता था, यह प्रशिक्षण ठोस कार्यक्रम के रूप में नहीं चलाये जाने थे।

एस. सी. ई. आर. टी. (1981) ने आन्ध्रप्रदेश में एक शोध किया जिसमें सरकारी और अनुदान प्राप्त शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में प्राथमिक शिक्षको के लिये सेवाकालीन कार्यक्रम के मूल्याकंन पर एक अध्ययन किया, जिसमें शोध के लिये 500 प्राथमिक स्कूल के विज्ञान के शिक्षको का चयन किया गया, और दो शहरो हैदराबाद व सिकंदराबाद के सरकारी और अनुदान प्राप्त शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों के सेवाकालीन कार्यक्मो को लिया गया । इस अध्ययन मे प्रशनावली उपकरणो का उपयोग किया गया ।

इस अध्ययन के उद्देश्य थेः- (1) सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रमों में होने वाली गतिविधियो का शैक्षिक मूल्याकंन करना। (2) सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम के उद्देश्यो का और पाठ्यक्रम तथ्यो की योग्यता का अध्ययन करना। इस शोध के निष्कर्ष थेः- (1) पर्याप्त स्टॉफ नहीं था (2) जिला शिक्षा अधिकारी का बहुत ज्यादा हस्तक्षेप रहता हैं।

जांगीरा (1982) में भारत में अंतः कालीन प्राथमिक शिक्षक शिक्षा के संबंध में अध्ययन किया। इस अध्ययन में उन्होंने राष्ट्रीय-स्तर पर हुये प्राथमिक शिक्षको की शिक्षा पर आधारित प्रोजेक्ट रिपोर्टों का पुनरावलोकन किया। प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण हेतु राष्ट्रीय अध्ययनों पर आधारित शोध एवं विकास मार्गदर्शक बनाये एवं मार्गदर्शन बिंदुओं का विकास हुआ।

मजूमदार (1982) ने अंतः सेवाकालीन कार्यक्रम के अंतर्गत नये विचारों एवं अभ्यास को माध्यमिक शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रम में जोड़कर आवश्यकता पर आधारित कार्यक्रम का अध्ययन किया। अध्ययन के परिणाम यह रहे, कि सफल अभ्यास केन्द्रित हो आवश्यकताओं पर आधारित हो तथा उद्देश्यों की प्राप्ति करता हो।

सिंह (1986) अंतः सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण की स्थिति के संबंध में अपने शोधकार्य में प्रशिक्षण कार्यक्रमों की कमियों में पाया कि यह आवश्यकता आधारित था अति सैद्धांतिक प्रशिक्षण के दौरान रेडियों, दूरदर्शन, दृश्यश्रृव्य, सामाग्री का प्रयोग न के बराबर किया जाता था। मूल्यांकन संतोषप्रद नहीं था, आपसी समन्वयक उचित नहीं था आदि।

रेड्डी, (1991) ने आन्ध्र प्रदेश में प्राथमिक शिक्षक के पूर्व प्राथमिक शिक्षा में गुणवत्ता को बढ़ावा देने के लिये एक अध्ययन किया। जिसमें इनके उद्देश्य थेः- (1) शिक्षक-शिक्षा को भौतिक सुविधा, शिक्षण प्रशिक्षण प्रक्रिया और पाठ्यक्रम तथा मूल्यांकन प्रक्रिया के आधार पर बढ़ावा देना। इस शोध के निष्कर्ष थेः- (1) जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों में भौतिक सुविधाऐ उपलब्ध नही है। (2) शिक्षक प्रशिक्षक का अनुपात 4:1 है, जिसमें महिला व पुरूष है।

तिवारी (1991) ने "मध्य प्रदेश में जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान की वर्तमान स्थिति का अध्ययन किया" इस अध्ययन के मुख्य उद्देश्य थे, (1) यह ज्ञात करना की जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान में नया पाठ्यक्रम लागू हुआ अथवा नहीं। (2) यह पता लगाना कि क्या प्रायोगिक कार्य सुचारू रूप से चल रहे है या नहीं। (3) सभी प्रशिक्षण कार्यक्रम किस प्रकार चल रहे है। इस शोध अध्ययन के निष्कर्ष इस प्रकार रहे है :- (1) पूर्व सेवाकालीन प्रशिक्षण के लिये नया पाठ्यक्रम लागू हो गया है, और उसमें छः विषयों को स्थान दिया गया है। (2) कार्यानुभव में टाटपट्टी निर्माण, बागवानी कृषि, काष्ठकला, खिलौना

निर्माण, चॉक बनाना सिखाया जाता है। (3) शिक्षको के सेवाकालीन प्रशिक्षण शासन के आदेशानुसार आयोजित होते है।

मालवीय (1996) ने जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम के संदर्भ में मध्य प्रदेश के जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान और विकास खंड स्त्रोत केन्द्रो में होने वाले शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम का अध्ययन किया इनके शोध के उद्देश्य थेः-(1) जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम के अंतर्गत मध्य प्रदेश के जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान और विकास खंड स्त्रोतो केन्द्र में होने वाले शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम का अध्ययन करना। (2.)प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रशिक्षको की समस्याओ एवं कमियो का अध्ययन करना। इनके अध्ययन के निष्कर्ष इस प्रकार थे :-(1) जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान और विकास खंड स्त्रोत के प्रशिक्षण कार्यक्रमो में प्राथमिक शिक्षको को शाला का अभिलेख तैयार करना, केशबुक भरने का प्रशिक्षण भी दिया गया। (2) जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान और विकास खंड स्त्रोत के प्रशिक्षण कार्यक्रम में सहायक आयुक्त से लेकर प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षित होते है और प्रशिक्षण की अवधि 1 दिन से 13 दिन की होती है।

भदौरिया (1998) ने ''विदिशा स्थित जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान की कार्य प्रणाली का एकक-वृत्त अध्ययन'' किया जिसमें इनके उद्देश्य थेः-(1) जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम के क्रियान्वयन में जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान की भूमिका एवं स्थिति का अध्ययन करना। (2) जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान के कार्यो का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना। इस अध्ययन के उन्होंने निष्कर्ष निकालेः- (1) अधिकांशतः प्रशिक्षणार्थी पढ़ाये जाने वाले पाठ्यक्रम से संतुष्ट है। (2) संस्थान में डीपीईपी कार्यक्रम में अंतर्गत जिला स्तर, विकास खंड स्तर तथा संकुल केन्द्र स्तर पर प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

भमान (2004) ने ''केन्द्रीय प्रवृत्ति योजना के अंतर्गत गुजरात के जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों के शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम का अध्ययन'' किया, इसमें इसके उद्देश्य थेः-(1) जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान में चलाये जाने वाले शिक्षक प्रशिक्षक कार्यक्रमो का अध्ययन करना। (2) जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान के सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमो का अध्ययन करना। इस शोध प्रबंध में इनके निष्कर्ष इस प्रकार थेः-(1) जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान द्वारा प्राथमिक शिक्षा से संबंधित सभी सैद्धांतिक तथा प्रायोगिक कार्यो का प्रशिक्षण दिया गया हैं। (2) सेवापूर्ण शिक्षक प्रशिक्षक में पी. टी. सी. एवं सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण संकुल स्त्रोत केन्द्र के मुख्य प्रशिक्षक, आंगनबाड़ी वर्कर तथा ग्राम शिक्षा समिति के सदस्य को प्रशिक्षित किया जाना है।